संस्थापित १८६७

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२४ ● अंक-०६ ● ११ फरवरी २०२० फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १६५ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३१२०

"सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है" –महर्षि दयानन्द

भूमि, भवन को अवैध कब्जों से मुक्त कराया जायगा
योजना बद्ध तरीके से जिला मुख्यालयों पर धरना होगा

डॉ0 धीरज सिंह
-सभा प्रधान

आर्य समाज प्रतापगढ़ के अर्न्तगत शीतला प्रसाद आर्य कन्या विद्यालय प्रातपगढ़ चल रहा था जिसमें भू-माफियाओं का अवैध कब्जा करने की नियत से विवाद उत्पन्न कर दिया उस विवाद में अदालत ने यथा स्थिति का आदेश कर दिया था। जिला प्रशासन और पुलिस की साठ-गांठ से दबंग भूमाफियाओं ने बुलडोजर चलाकर विद्यालय की बिल्डिंग (भवन) को गिरा दिया है। प्रतापगढ़ के बीचो-बीच घनी आबादी में यह भवन था। इस भवन के जबरन गिराये जाने पर आर्यों में और प्रतापगढ़ के जन मानस में भारी आक्रोस है।

आर्य समाज प्रताप गढ़ के पदाधिकारियों ने आर्य प्रतिनिधि सभा में पत्र भेजकर सभा प्रधान जी को जानकारी दी। आर्य प्रतिनिधि सभा ने 2 फरवरी 2020 की अन्तरंग में यह विषय रखा और 3 फरवरी 2020 को ही प्रतापगढ़ में धरना प्रदर्शन का निर्णय लिया गया। उ0प्र0 आर्य समाज के लोगों ने बड़े ही जोश के साथ इस कार्य को करने में समर्थन देते हुए प्रधान जी को आश्वासन दिया की हम सभी आपके साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेगे और किसी भी परिस्थिति में पीछे नहीं हटेंगे।

उ0प्र0 आर्य आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ0 धीरज सिंह ने सरकार से मांग की है कि उ0प्र0 के उन आर्य समाजों पर जहां लोग नाजायज तरीके से कब्जा कर रहे हैं उन कब्जों को हटाने में सरकार आर्य समाज का साथ देकर उनके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही करके ऐसे लोगों को जेल में भेजें और जमीन, मकान और दुकानों को कब्जा मुक्त कराया जायेगा। सभा प्रधान डॉ0 धीरज सिंह ने घोषणा की कि कितने ही बाहुबली इस प्रकार कब्जा कर रहे है उसे कब्जा नहीं करने दिया जायगा चाहे मुझे अपनी जान देकर प्राण निवछावर करने पड़े प्राणों की बाजी लगा कर धर्म के लिए बलिदान होने की आर्य समाज की पुरानी परम्परा का निर्वाह करेंगे।

सभा प्रधान धीरज सिंह ने यह भी घोषणा की पूरे प्रदेश में योजनाबद्ध तरीके से अवैध कब्जों के विरोध में हर जिला स्तर सोमवार को जिला मुख्यालय पर धरना दिया जायगा। यदि धरना प्रदर्शन के बाद भी सरकार अवैध कब्जों का नहीं हटवाती तो आर्यसमाज आन्दोलन का रास्ता अपनायेगी।

आर्य समाज ने धर्म और देश की रक्षा के लिए अनेक सत्याग्रह प्रदर्शन धरना एवं आन्दोलन किये। आर्य समाज आन, बान, शान पर ही परिस्थिति में संघर्ष के लिए तैयार रहा है और आर्य समाज के लिए हम सभी बलिदान देकर आर्य समाज के भवन भूमि की रक्षा करेंगे।

विश्ववारा संस्कृति

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य[93], रायस्पोषस्य ददितारः स्याम[99]।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा[99], स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः[99]। यजु० ७.१४

आओ, हम सर्वश्रेष्ठ विश्व–वरणीय वैदिक संस्कृति को अपनायें। पर वह संस्कृति है क्या? उसकी प्रथम विशेषता है दान–भावना। 'सोम' प्रभु अनन्त ऐश्वर्यों के भण्डार हैं। उनके पास से हमारी ओर अनन्त ऐश्वर्य और अनन्त सुवीर्य अच्छिन्न रूप से प्रवाहित हो रहे हैं। 'सोम' प्रभु ने जगत की समस्त वस्तुएँ रचकर बिना मूल्य के ही हमें दान की हुई हैं। जो नानाविध सांसारिक धन–दौलत, सोना–चाँदी, हीर–मोती, वस्त्र, अलंकार, गृह–हवेली आदि हमारे पास हैं, जिनके स्वामी होने का हम गर्व करते हैं, वे 'सोम' प्रभु के ही दिये हुए हैं। हमें जो भी शारीरिक, भौतिक या आत्मिक ऐश्वर्य प्राप्त हुआ है, वह सब उसी का दिया हुआ है। हमारे अन्दर जो बल, वीर्य और सामर्थ्य है, जो दैहिक बल है, जो शिव–संकल्प का मनोबल है, जो बुद्धि का निश्चय–सामर्थ्य–रूप बल है, जो आत्मा का ज्ञान आदि रूप बल है, वह सब भी 'सोम' प्रभु की ही देन है। वैदिक संस्कृति कहती है कि हम एक हाथ से इन सब ऐश्वर्यों और सुवीर्यों को प्रभु से ले रहे हैं, तो दूसरे हाथ से इनका औरों को दान भी करते रहें। धन और बल यदि एक स्थान पर केन्द्रित हो जाते हैं, तो वे अनर्थकारी परिणाम उत्पन्न करने लगते हैं। अतः 'सोम' प्रभु के समस्त अमृत–पुत्रों में उसका संविभाजन होते रहना आवश्यक है। वैदिक संस्कृति की दूसरी विशेषता है 'वरूण', 'मित्र' और 'अग्नि' के आदर्शों को अपने सम्मुख रखना। हम वैदिक 'वरुण' प्रभु के समान पाप एवं अनृत आचरण को पाशों से जकड़ने वाले तथा सत्य का प्रसार करने वाले बनें। हम 'मित्र' प्रभु के समान विश्व–बन्धुत्व की भावना को साकार करें। हम अन्यों को मित्र की आँख से देखें, अन्य लोग हमें मित्र की आँख से देखें। सब राष्ट्र एक–दूसरे के साथ मैत्री की श्रंखला में बंधे हों। फिर हम 'अग्नि' प्रभु के समान तेजस्वी, तपस्वी और प्रकाश फैलाने वाले बनें। कहीं भी अविद्या आदि का अन्धकार व्याप्त हो, तो उसे हम सहन न करें। इस प्रकार धन और बल के दान की भावना, पाप और असत्य के उन्मूलन की भावना, विश्व–मैत्री की भावना तथा प्रकाश–प्रसार की भावना वैदिक संस्कृति के प्रमुख अंग हैं, जिनके कारण यह संस्कृति विश्व से वरण किये जाने योग्य है।

आवश्यक सूचना

संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ की पंजीकृत नियमावली के नियम ५ (ए) के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के अन्तरंग सदस्यों की बैठक दिनांक १६.०२.२०२० को बैठक सम्पादित होगी। दिन रविवार तदनुसार फाल्गुन कृष्ण पक्ष अष्टमी को पूर्वाह्न ११.०० बजे से संस्था कार्यालय नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में सम्पन्न होगी, आपकी उपस्थिति अतिआवश्यक एवं प्रार्थनीय है। ऐजेण्डा प्रेषित किया जा चुका है।

डॉ0 धीरज सिंह
प्रधान

ज्ञानेन्द्र सिंह
मंत्री

डॉ0 धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
मन्त्री

सत्यवीर शास्त्री
संपादक

सम्पादकीय.....

वेद अपौरूषेय है

वेद शब्द की व्युत्पत्ति चार धातुओं से मानी गई है। १. विद्–ज्ञाने, २ विद् –विचारणे, ३. वदलृलाभे, ४. विद सत्तायाम्। इस विषय परम्परागत एक श्लोक भी प्राप्त होता है–

सत्तायां विद्यते, ज्ञानेवेंति, विन्ते विचारणे

विन्दले विन्दन्ति प्राप्तौ, श्यनलुकरनम् शेषचक्रांमत्।।

विन्दन्ति, जानन्ति, विद्यन्ते–भवन्ति, विदन्ति, अथवा विन्दते लभन्ते, विन्दवन्ति, विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वा सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः।

–ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

जानते हैं, होते है, प्राप्त करते हैं, विचार करते हैं समस्त मनुष्य सब विद्याओं को जिससे अथवा जिनमें और विद्वान होते हैं उनको वेद कहते हैं।

जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तक है जिनसे मनुष्यों का सत्यासत्य का ज्ञान होता है उनको वेद कहते है वेद अपौरूषेय हैं वे ईश्वर के रचे हुए हैं। जिस प्रकार ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्या युक्त तथा सर्वशक्तिमान है अतः ईश्वर का निर्भ्रम ज्ञान होने वह स्वतः प्रमाण है वेद भी स्वतः प्रमाण है उनका ज्ञान निभ्रम सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक है।

वेद किसी मनुष्य के बनाये हुए नहीं है परमात्मा ने जब सृष्टि की रचना की तो वेद का ज्ञान चार ऋषियों के हृदय में आत्म प्रेरणा स्वरूप प्रकाशित किया। अग्नि, वायु, आदित्य, और अंगिरा इन चारों मनुष्यों को जैसे कोई वदित्र को बजावे वा काठ की पुतली को चेष्ठा करावे, इसी प्रकार से ईश्वर ने उनको निमित्त मान लिया था''

–ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

१. अग्नि ऋर्षि द्वारा ऋग्वेद। २. वायु ऋषि द्वारा यजुर्वेद।

३. आदित्य ऋषि द्वारा सामवेद। ४. अंगिरा द्वारा अथर्व वेद प्रकट हुए।

वेद ईश्वर कृत ज्ञान है क्योंकि –

१. वेद ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल है।

२. इनमें किसी व्यक्ति विशेष व जाति विशेष को सम्बोधित नहीं किया अपितु सर्व साधारण को सम्बोधित किया गया।

३. वेदों में सृष्टि क्रम, बुद्धि और विद्या के विरूद्ध कोई बात नहीं कहीं गई है।

४. वेदों में लौकिक इतिहास और घटनाओं का भी वर्णन नहीं किया गया चूंकि लौकिक इतिहास और घटनायें मनुष्य के स्वभाव की है। ईश्वर की स्वभाव नही।

वेद में एक निराकर ईश्वर की उपासना बताता है जिसका मुख्य नाम ओ३म् है। ईश्वर के स्थान पर किसी अन्य देवी देवता अथवा प्रकृति के जड़ वस्तु की पूजा नहीं बताता है। परमात्मा के १०० नामों की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश में की गई लेकिन वे सभी परमात्मा के गौणिक नाम है। वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है संसार की सब सत्य विद्यायें वेदों में मूलरूप से विद्यामन है जो अनुसन्धान से प्रकट होती है। विज्ञान के सभी सिद्धान्तों की वेद में समावेश है। वेदों में इतिहास नहीं है वेद के शब्दों के सत्यार्थ एवं विशेषार्थ को न जानने वाले इतिहासकारों ने व्यर्थ में इससे इतिहास निकालने का निष्फल प्रयास किया है। वेद सार्वभौतिक सार्वकालिक सत्य सनातन आदर्शों को प्रस्तुत करता है।

वेद का ज्ञान नित्य है जैसे इस कल्प की सृष्टि में शब्द अक्षर अर्थ और सम्बन्ध वेदों में हैं इसी प्रकार से पूर्व कलप में भी ये आगे भी होगें क्योंकि ईश्वर की जो विद्या है सो नित्य एक सी रहती है। उनके एक अक्षर का भी भाव कभी विपरीत नहीं होता सो ऋग्वेद से लेकर चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की है इनमें शब्द अर्थ सम्बन्ध पद और अक्षरों का जिस क्रम से वर्तमान है उसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है। क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है– उसकी वृद्धि, क्षय और विपरीतता कभी नहीं होती, इस कारण से वेदों का नित्य स्वरूप मानना चाहिए। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

सृष्टि के आरम्भ में आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेकर हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्यविद्याओं को सुनते आते है इससे वेदों का श्रुति नाम पड़ा क्योंकि किसी देहधारी ने वेदों को बनाने वाले साक्षात् कभी नहीं देखा इस कारण जाना गया है कि वेदे निराकार ईश्वर से उत्पन्न हुए और उसके सुनते सुनाते ही आज पर्यन्त सब लोग चले आते हैं।

–ऋग्वेदभाष्य भूमिका

–सम्पादक

गतांक से आगे .....

उत्तरार्द्ध

अथैकादशसमुल्लासारम्भः

अथाऽऽर्य्यावर्त्तीयमतखण्डनमण्डने विधास्यामः

चाहे कितना ही दुःख प्राप्त हो और प्राण कण्ठगत अर्थात् मृत्यु का समय भी क्यों न आया हो तो भी यावनी अर्थात् म्लेच्छभाषा मुख से न बोलनी। और उन्मत्त हस्ती मारने को क्यों न दौड़ा आता हो और जैन के मन्दिर में जाने से प्राण बचता हो तो भी जैसे मन्दिर में प्रवेश न करे। किन्तु जैन मन्दिर में प्रवेश कर बचने से हाथी के सामने जाकर मर जाना अच्छा है। ऐसे–ऐसे अपने चेलों को उपदेश करने लगे। जब उनसे कोई प्रमाण पूछता था कि तुम्हारे मत में किसी माननीय ग्रन्थ का भी प्रमाण है? तो कहते थे कि हां है। जब वे पूछते थे कि दिखलाओ? तब मार्कण्डेय पुराणादि के बचन पढ़ते और सुनाते थे जेसा कि दुर्गापाठ में देवी का वर्णन लिखा है।

राजा भोज के राज्य में व्यास जी के नाम से मार्कण्डेय और शिवपुराण किसी ने बना कर खड़ा किया था। उसका समाचार राजा भोज को होने से उन पण्डितों को हस्तच्छेदनादि दण्ड दिया और उनसे कहा कि जो कोई काव्यादि ग्रन्थ बनावे तो अपने नाम से बनावे, ऋषि मुनियों के नाम से नहीं। यह बात राजा भोज के बनाये सञ्जीवनी नामक इतिहास में लिखी है कि जो ग्वालियर के राज्य 'भिण्ड' नामक नगर के तिवाड़ी ब्राह्मणों के घर में हैं। जिसको लखुना के रावसाहब और उन के गुमाश्ते रामदयाल चौबे जी ने अपनी आंखों से देखा है। उसमें स्पष्ट लिखा है कि व्यास जी ने चार सहस्त्र चार सौ और उनके शिष्यों ने पांच सहस्त्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् सब दश सहस्त्र श्लोकों के प्रमाण भारत बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्त्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिता जी के समय में पच्चीस और मेरी आधी उमर में तीस सहस्त्र श्लोकयुक्त महाभारत का पुस्तक मिलता है। जो ऐसे ही बढ़ता चला तो महाभारत का पुस्तक एक ऊंट का बोझा हो जायेगा और ऋषि मुनियों के नाम से पुराणादि ग्रन्थ बनावेंगे तो आर्यावर्त्तीय लोग भ्रमजाल में पड़ वैदिकधर्मविहीन होके भ्रष्ट हो जायेंगे। इससे विदित होता है कि राजा भोज को कुछ–कुछ वेदों का संस्कार था। इनके भोजप्रबन्ध में लिखा है कि–

घट्येकया कोशदशैकमश्वः सुकृत्रिमो गच्छति चारुगत्या।

वायुं ददाति व्यजनं सुपुष्कलं विना मनुष्येण चलत्यजस्त्रम्।।

राजा भोज के राज्य में और समीप ऐसे–ऐसे शिल्पी लोग थे कि जिन्होंने घोड़े के आकार एक यान यन्त्रकलायुक्त बनाया था जो एक कच्ची घड़ी में ग्यारह कोश और एक घण्टे में साढ़े सत्ताईस कोश जाता था। वह भूमि और अन्तरिक्ष में भी चलता था। और दूसरा पंखा ऐसा बनाया था कि बिना मनुष्य के चलाये कलायन्त्र के बल से नित्य चला करता और पुष्कल वायु देता था। जो ये दोनों पदार्थ आज तक बने रहते तो यूरोपियन इतने अभिमान में न चढ़ जाते।

जब पोप जी अपने चेलों को जैनियों से रोकने लगे तो भी मन्दिरों में जाने से न रुक सके और जैनियों की कथा में भी लोग जाने लगे। जैनियों के पोप इन पुराणियों के पोपों के चेलों को बहकाने लगे। तब पुराणियों ने विचारा कि इसका कोई उपाय करना चाहिये, नहीं तो अपने चेले जैनी हो जायेंगे। पश्चात् पोपों ने यही सम्मति की कि जैनियों के सदृश अपने भी अवतार, मन्दिर, मूर्ति और कथा के पुस्तक बनावें। इन लोगों ने जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों के सदृश चौबीस अवतार, मन्दिर और मूर्तियाँ बनाईं। और जैसे जैनियों के आदि और उत्तर–पुराणादि हैं वैसे अठारह पुराण बनाने लगे।

राजा भोज के डढ़े सौ वर्ष के पश्चात् वैष्णवमत का आरम्भ हुआ। एक शठकोप नामक कंजरवर्ण में उत्पन्न हुआ था, उससे थोड़ा सा चला। उसके पश्चात् मुनिवाहक भंगी–कुलोत्पन्न और तीसरा यावनाचार्य यवनकुलोत्पन्न आचार्य हुआ। तत्पश्चात् ब्राह्मण कुलज चौथा रामानुज हुआ उसने अपना मत फैलाया। शैवों ने शिवपुराणादि, शक्तों ने देवीभागवतादि वैष्णवों ने विष्णुपुराणादि बनाये। उनमें अपना नाम इसलिये नहीं धरा कि हमारे नाम से बनेंगे तो कोई प्रमाण न करेगा। इसलिये व्यास आदि ऋषि मुनियों के नाम धरके पुराण बनाये। नाम भी इनका वास्तव में नवीन रखना चाहिये था परन्तु जैसे कोई दरिद्र अपने बेटे का नाम महाराजाधिराज और आधुनिक पदार्थ का नाम सनातन रख दे तो क्या आश्चर्य है? अब इनके आपस के जैसे झगड़े हैं, वैसे पुराणों में भी धरे हैं।

क्रमशः

आर्य समाज की मान्यतायें

□ पं. रामचन्द्र देहलवी

आश्रम

पहला आश्रम ब्रह्मचर्य आश्रम है। यह विद्या पढ़ने, सुशिक्षा लेने और बलवान होने के लिए है। जब बच्चा पैदा होता है तो सबसे पहले माँ बाप उसकी देखभाल करते हैं और अभ्यास के साथ–साथ उसका पालन भी करते हैं। जब कुछ बड़ा हो जाता है तो उसको गुरू के पास पढ़ने के लिए बैठा देते हैं। इसी का नाम ब्रह्मचर्य आश्रम है। इसकी अवधि लड़के के लिए कम से कम २५ साल और लड़की के लिए १६ साल है। इस आश्रम की जिम्मेदारी तीन व्यक्तियों पर होती है। पहली माता जो पांच वर्ष तक उसे आवश्यक बातों का अभ्यास कराती है, यदि माता योग्य हो तो वह अपने बच्चे को अच्छी–अच्छी बातें सिखाती है और बच्चा बिना परिश्रम के बहुत सी ज्ञान की बातें सीख लेता है। यदि माता कुलक्षणी हो तो उसका बच्चा आरंभ से ही बुरी बातें सीख लेता है और उसका सुधरना कठिन हो जाता है।

पांच वर्ष के पीछे बच्चा पिता के साथ रहने लगता है। बाप यदि बुरा है तो बच्चा बुरा और यदि बात अच्छा है तो बच्चा भी अच्छा हो जाता है।

जब बच्चा आठ साल को जाता है तो तब उसका उपनयन करा के गुरू के पास विद्या प्राप्ति के लिए भेज देते हैं। यह नियम लड़के और लड़की दोनों के लिए समान है। परन्तु भेद यह है कि लड़के और लड़की इस अवस्था के पश्चात् अलग–अलग पाठशालाओं में भेज दिये जाते हैं सहशिक्षा इसकाल के पश्चात नहीं दी जाती जो सदाचार की बाधक है।

दूसरा गृहस्थाश्रम– यह सब प्रकार के उत्तम व्यवहार सिद्ध करने के लिए है अर्थात् संतान उत्पन्न करना और उसको योग्य बनाना, धर्म से धन कमाना और धर्म में व्यय करना और अन्य आश्रमियों का पालन करना। इसीलिए इसको ज्येष्ठ आश्रम भी कहते हैं। जो आचार से रहता हुआ आजन्म ब्रह्मचारी रहना चाहे वह रह सकता है परन्तु जो न रह सकें वह अपने–अपने वर्ण में विवाह कर सकता है। ऐसे पुरूष के लिए भी कम से कम २५ वर्ष और कन्याओं के लिए १६ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहना अनिवार्य है। विवाह करने वाले पुरूष और स्त्री यदि २५ वर्ष से भी दीर्घकाल तक ब्रह्मचर्य रखना चाहे तो रख सकते हैं। परन्तु ४८ वर्ष के पश्चात नहीं रखना चाहिए। कुमार और कुमारी का धर्मशास्त्रानुसार दाम्पत्य सम्बन्ध वैदिक परिभाषा में विवाह कहलाता है। विधुर से विधवा के सम्बन्ध को पुर्नविवाह कहते हैं। यह शूद्र कर्म है, द्विज कर्म नहीं परन्तु पाप कर्म भी नहीं है। विधुर का कन्या से विवाह अवैदिक कर्म है इसके करने से बहुत से बिगाड़ उत्पन्न हो जाते हैं और इससे एक कुमार और एक विधवा के अधिकारों का हनन होता है। विधुर और विधवा यदि द्विज हो और ब्रह्मचर्य न रख सकें तो उनके लिए नियोग का विधान है। उससे सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं। यदि ब्रह्मचर्य रख सकें तो अपने कुल की परम्परा रखने के लिए किसी अपने स्वजातीय का लड़का गोद ले सकते हैं। उससे कुल चलेगा परंतु वैश्यागमन का व्याभिचार कभी न करें।

नियोग–भी विवाह की भांति नियमानुसार प्रसिद्धि से किया जाता है। भेद केवल इतना है विवाह में पत्नी पति के साथ उसके घर आती है और वहां रहती है परंतु नियोग में पति और पत्नी अपने–अपने घर पर ही रहते हैं। केवल गर्भाधान के लिए नियुक्त पुरूष नियुक्ता स्त्री के घर जाता है। नियुक्त पुरूष अपने कुल का और नियुक्ता स्त्री अपने मृत पति के कुल का नाम चलाने के लिए प्रत्येक अपने लिए केवल दो–दो संतान उत्पन्न कर सकते हैं विशेष नहीं। इसके पश्चात सम्बन्ध विच्छेद हो जायेगा।

तीसरा वानप्रस्थ आश्रम– यह विज्ञान बढ़ाने और तपश्चर्या करने के लिए हैं। यह गृहस्थ का मोह छोड़कर वन में जाकर रहने का आश्रम है। वर्तमान काल में वैदिक राज्य न होने के कारण वानप्रस्थियों को वन जाने की पर्याप्त सुविधायें नहीं हैं।

चौथा सन्यासाश्रम– यह वेदादि शास्त्रों का प्रचार धर्म व्यवहार का ग्रहण, दुष्ट व्यवहार का त्याग, सत्योपदेश और सबको निस्सन्देह करने के लिए हैं।

राज्य व्यवस्था

जैसा परम विद्वान ब्राह्मण हाता है वैसा ही विद्वान सुशिक्षित क्षत्रिय को भी होना योग्य है कि जिससे सब राज्य की रक्षा न्याय के यथावत करें।

एक के स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिए। राजा सभापति हो, उसके अधीन सभा हो, सभा के अधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन हो। इसलिए तीन सभाओं का निर्माण किया जाये।

१. विद्यार्य सभा, २. धर्मार्य सभा, ३. राजार्य सभा।

महाविद्वानों को विद्या सभाधिकारी

धार्मिक विद्वानों को धर्म सभाधिकारी

प्रशंसनीय धार्मिक पुरूषों को राजसभा के सभासद और जो उन सब में सर्वोत्तम गुण कर्म स्वभाव वाले महापुरूष हो उसको राजसभा का पति रूप अर्थात् अध्यक्ष माना जाये।

उपर्युक्त सभाओं के सभासद सदा विद्वान और धार्मिक पुरूष होने चाहिए मूर्खों को कभी भर्ती न करना चाहिए। क्योंकि ऐसे पुरूषों के पीछे चलने से सैकड़ों प्रकार के पाप लग जाते हैं काम और क्रोध से उत्पन्न हुए व्यसनों में राजा को नहीं फंसना चाहिए।

काम से उत्पन्न हुए व्यसन दस है

१. शिकार खेलना, २. जुआ खेलना, ३. दिन में सोना, ४. काम कथा या दूसरे की निन्दा किया करना, ५. स्त्रियों का अति संग, ६. मद्यपान, ७. गाना बजाना, ८. नाचना, नाच कराना और देखना, ९. वृथा इधर उधर घूमना, इनमें फंसने से अर्थ अर्थात् राज्य धनादि और धर्म से रहित हो जाता है।

क्रोध से उत्पन्न हुए आठ व्यसन

१. चुगली करना, २. बिना बिचारे किसी स्त्री से बलात्कार बुरा काम करना, ३. द्रोह करना, ४. ईष्या करना, ५. दोषों में गुण और गुणों में दोषारोपण करना, ६. अधर्मयुक्त बुरे कर्मों में धनादि का व्यय करना, ७. कठोर वचन बोलना, ८. बिना अपराध कड़ा वचन या विशेष दण्ड देना इनके करने राजा शरीर से भी रहित हो जाता है।

युद्ध में लोग किन–किन लोगों पर शस्त्र का प्रहार न करें

१. इधर उधर खड़े हुए, २. नपुंसक, ३. हाथ जोड़े हुए, ४. जिसके सिर के बाल खुले हुए हों, ५. बैठे हुए, ६. शरणागत पर, ७. सोते हुए, ८. मूर्छित हुए ९. नग्न हुए, १०. आयुध से रहित, ११. युद्ध करते हुए को देखने वाले, १२. आयुध के प्रहार से पीड़ा को प्राप्त हुए, १३. दुःखी व्यक्ति पर, १४. अत्यन्त घायल व्यक्ति पर, १५. डरे हुए, १६. पलायन करते हुए हुए पुरूष पर।

विशेष इस पर ध्यान रखें कि स्त्री बालक, वृद्ध और आतुर तथा शोकयुक्त पुरूषों पर शस्त्र कभी न चलायें। उनके लड़ने वालों को अपने संतानवत् पाले और स्त्रियों को भी पाले, उनको अपनी बहिन और कन्या के समान समझें, कभी विषयाशक्ति की दृष्टि से भी न देखें। जब राज्य अच्छे प्रकार स्थित हो जाय और जिससे पुनः–पुनः युद्ध करने की शंका न हो उनको सत्कारपूर्वक छोड़कर अपने घर व देश को भेज देंवें।

सभापति राजा कैसा होना चाहिए?

इन्द्रो जयाति न पराजयाता अधिराजो राजसु राजयाते।
चर्कृत्य ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमयो भवेह।।

(इह) इस मनुष्य समुदाय में जो (इन्द्र) परम ऐश्वर्य का कर्ता शत्रुओं को (जयाति) जीत सके (न पराजयातै) जो शत्रुओं से पराजित न हो (राजसु) राजाओं में (अधिराजः) सर्वोपरि विराजमान (राजयातै) प्रकाशमान हो (योपसद्यः) और समीप जाने और शरण लेने योग्य (नमस्य) सबको माननीय (भव) (होवे उसको सभापति राजा करें) राजा और प्रजा के परस्पर सम्बन्ध और उनके कर्म को विशेष रूप से जानने के लिए 'मनुस्मृति' को देख सकते हैं। यहां केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है।

विदेश यात्रा

आर्य समाज विदेश यात्रा का और देश देशान्तरों के उत्तम पुरूषों के साथ समागम और व्यवहार करने का विरोधी नहीं है। उनके मांसभक्षण और मद्यपानादि दोषों को छोड़कर गुणों को ग्रहण करें तो कुछ हानि नहीं।

भक्ष्याभक्ष्य (खान–पान)

जो पशु पक्षी आदि अपनी मौत मर जाते है उनका मांस भी न खाये क्योंकि खाने वाले का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा, चोरी, विश्वासघात, छल–कपटटादि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना है वह ''भक्ष्य'' कहलाता

शेष पृष्ठ 4 पर

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य समाज की ...

है।

जिन पदार्थों से स्वास्थ्य, रोगनाश, बुद्धि, बल, पराक्रम वृद्धि और आयु वृद्धि होवे उन तण्डुलादि गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी मिष्ठान्नादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब 'भक्ष्य' कहलाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति के विरूद्ध कार्य करने वाले हैं, उन उनका सर्वथा त्याग करना और जो–जो जिन–जिन के लिए विहित है उन–उन पदार्थों का ग्रहण करना, यह भी भक्ष्य है।

एक ही थाल में साथ बैठकर खाने या पीने को आर्य समाज निषिद्ध समझता है। उच्छिष्ट (जूठा) किसी का भी न खाना चाहिए। यदि कोई हिंसारहित शुद्ध भोजनपानादि करने वाला शुद्ध बर्तनों में स्वच्छता से भोजन बनाये तो उसके हाथ का भोजन खाने में कोई दोष नहीं है चाहे वह व्यक्ति किसी भी वर्ण का क्यों न हो।

मलिनता से रहने वाला अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण करने वाला, उच्च वर्ण, नामधारी मनुष्य भी मलिन व अपवित्र ही समझा जाता है युद्धादि असाधारणावस्था में उसके उद्देश्य के विघातक कार्य न करने चाहिए। उस समय शायद घोड़े पर चढ़े–चढ़े ही भोजन करना पड़े।

मूर्ति पूजा

आर्य समाज केवल एक ईश्वर को ही उपासना के योग्य मानता है। "मूर्तिपूजा" को पाप और अनेक बुराइयों की जड़ समझता है। यदि कोई मूर्तियां पूजने योग्य है तो वे माता, पिता, आचार्य, अतिथि और पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति ही पूजनीय है। इनकी तन मन और धन से यथायोग्य सेवा करना ही इनकी पूजा है। ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना द्वारा उसके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल अपने गुण कर्म स्वभाव को करते जाना और बड़े यश अर्थात् धर्मयुक्त कामों का करना और निष्काम भाव से संसार की सेवा करना ही परमेश्वर का नाम स्मरण है।

महर्षि दयानन्द के सिद्धान्त

१. ऋषि दयानन्द "सत्य" को सर्वोपरि मानते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

२. ऋषि संसार के सब मनुष्यों को एक ईश्वर का पुत्र होने के नाते भाई मानते थे। मनुष्य और मनुष्य के मध्य खड़ी समस्त भेद की दीवारों को वे समूल नष्ट करना चाहते थे। मनुष्य मात्र की एक जाति एक धर्म, एक लक्ष्य की स्थापना उनका इष्ट था। जन्म से सब मनुष्य समान और कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र हैं। वर्ण गुण–कर्म–स्वभाव सूचक है जाति सूचक नहीं।

३.ऋषि संसार के सब मनुष्य मात्र को यह ज्ञान कराना था कि वह शरीर नहीं शरीर का स्वामी आत्मा है आत्मतत्व को जान ईश्वर का निरन्तर सानिध्य प्राप्त कर मनुष्य सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। "ज्ञान" का उद्देश्य आत्मत्व की प्राप्ति का मार्ग निर्देशन है। हम संसार के समस्त कर्मो को करते हुए उस ऐश्वर्य का संग्रह करें जो धरती से विदा होते हुए साथ जा सकें। भोगवाद और अध्यात्म का समन्वय ऋषि का विशेष सन्देश था।

४. ऋषि का यह अटूट विश्वास था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना सुनाना वे परम धर्म मानते थे। "वेद" के ज्ञान प्रचार के अतिरिक्त और कोई मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं। उनका विचार था कि जब से भारतवासियों ने वेद का स्वाध्याय छोड़ा है तभी से भारत का पतन आरम्भ हुआ है। वस्तुतः वेद की विचारधारा का साम्राज्य धरती पर स्थापित करना ही ऋषि का परम लक्ष्य था।

५. नारी जाति को ऋषि पूजनीय मानते थे। उन्होंने ५००० वर्षों के बाद सबल स्वरों में यह घोषित किया था कि "यत्र नार्यतु पूज्यते, रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहां नारी की पूजा की जाती है वहां देवता निवास करते हैं।

६. ऋषि की दृष्टि में "धर्म" वह है जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।" उनका मानना था कि "मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है, जो सत्य है उसका मानना–मनवाना और जो असत्य है उसका छोड़ना छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

७. ऋषि का आदेश था कि "अन्यायकारी" अगर बलवान भी हो तो भी उससे नहीं डरना चाहिए, बल्कि अगर कोई धर्मात्मा पुरूष निर्बल भी तो उससे डरकर रहना चाहिए। इतना ही नहीं किंतु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित ही क्यों न हो उनकी रक्षा, उन्नति और प्रियाचरण सदा किया करें परन्तु अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उनका आचरण कदापि नहीं करना चाहिए।

८. ईश्वर जीव और प्रकृति को अनादि मानते हुए जीव को भोक्ता प्रकृति को साधन और ईश्वर को नित्य मानते थे। आनन्द प्राप्त करना जीव का लक्ष्य है। निरन्तर कर्म करते हुए प्रभु की प्राप्ति के लिए यत्नशील रहना ही ज्ञान मार्ग उन्होंने बताया।

९. गंगा स्नान, व्रत, जड़ पूजा से पाप क्षमा नहीं होते। कर्मों का फल सभी को भोगना ही होगा। ऋषि का यह विश्वास पुण्य और धर्म भाव की आधारशिला था।

१०. मूर्ति पूजा– अवतारवाद, छूआछूत, गुरूडम और अंधविश्वास, भूतप्रेत आदि मत–मतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे और वे उन्हें मनुष्य जाति के पतन का कारण मानते थे।

११. ऋषि दयानन्द एक ईश्वर को ही उपास्य देव मानते थे। नाना प्रकार के दवी देवताओं और अवतारवाद को वे पतन का हेतु समझते थे। उनकी मान्यता थी कि मनुष्य मात्र अपने शुभ कर्मों से ही मोक्ष को प्राप्त कर सकता है इसके लिए किसी पैगम्बर या गुरू की सिफारिश आवश्यक नहीं।

१२. महर्षि दयानन्द ऐसी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और आध्यात्मिक व्यवस्था चाहते थे जिसके द्वारा संसार स्वर्ग बन जाए और जन्म से मृत्यु तक कोई भी मनुष्य दुख कष्ट क्लेश अनुभव न करें।

१३. "सर्वत्र सत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्त मत में करा, द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके, सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।" ऋषि का यह चरम लक्ष्य उनके ही शब्दों में कितना स्पष्ट है।

१४. अपने चरम लक्ष्य को पूरा करने की ऋषि की प्रबल इच्छा थी। वे लिखते हैं "सर्व शक्तिमान परमात्मा की कृपा सहाय और आप्त जनों की सहानुभूति से यह सिद्धान्त सर्वत्र भूगोल में शीघ्र प्रवृत्त हो जाये।" क्यों प्रवृत्त हो जाए? उत्तर ऋषि के ही शब्दों में इस प्रकार है–

"जिससे सब लोग सहज से धर्मार्थ काम मोक्ष की सिद्धि करके सदा उन्नत और आनन्दित होते रहे। यही मेरा मुख्य प्रयोजन हैं।"

पाठकगण आपने देखें ऋषि के सिद्धान्त देखी उनकी महान विश्व–प्रेम की भावना! उनका सत्य प्रेम और ईश्वर विश्वास!!!

आपके जीवन को इससे यदि प्रकाश और प्रेरणा मिली हो तो इन गुणों को अपने जीवन में धारण कीजिए। मूर्ति पूजा छोड़, प्रभु की शरण में आने के लिए ऋषि का महान ग्रंथ "सत्यार्थ प्रकाश पढ़िये। विश्वास रखिये कि ऋषि दयानन्द की बताई हुई राह पर चलने से आपके जीवन में कभी भी दुख कष्ट और क्लेश नहीं मिलेगा। संसार के कल्याण के लिए बोलिए–

"महर्षि दयानन्द की जय"

स्वाहा

हो यज्ञ ज्योति प्रखरम्।
दो दिव्य दिशा मधुरम मधुरम्।
स्वाहा सुन्दर स्वर संचारी।
यज्ञ अग्नि की पत्नी प्यारी।
सत्य उत्साह स्वधा सात्त्वना,
निज सर्वस्व समर्पण कारी।
दो सुधा शक्ति सुखरम् सुखरम्।
दो दिव्य दिशा मधुरम् मधुरम।। १।।
सबको विद्युत प्रीति चाहिए।
सुख वैभव की जीति चाहिए।
पर इसके स्पर्श भयंकर से,
बच रहने की रीति चाहिए।
हो यश शरीर सुखरम् मुखरम्।
दो दिव्य दिशा मधुरम् मधुरम।।२।।
हो हाथ मधुर हो ह्रदय मधुर।
हो हिमाद्रिवत मस्तिष्क मधुर।
मधुर कर्म हो मधुर भावना,
हो सारस्वत विज्ञान मधुर।
हो नर जीवन अमरम्।
हो दिव्य दिशा मधुरम् मधुरम्।।३
स्रोत– स्वाहा मरुभ्दिः परि
श्रीयस्व दिवः सँ स्पृशस्पाहि।
मधु मधु मधु।। युज० ३७.१३

नेताजी के आज 123वें जन्म दिवस पर

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने महान बलिदान देकर देश को स्वतन्त्र कराया

मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

देश को आजादी दिलानें में अगणित लोगों ने बलिदान दिये हैं। सबके बलिदान महान व नमन करने योग्य हैं। कुछ ऐसे नेता भी होते हैं जिनका योगदान कम परन्तु प्रचार अधिक होता है। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ऐसे नेता नहीं थे। उनका बलिदान भी महान था और उन्होंने देश को स्वतन्त्र कराने के लिये जो कार्य किये वह भी महान एवं नमन करने योग्य हैं। उन जैसे चरित्रवान देशभक्त नेता देश के इतिहस में बहुत कम हुए हैं जो प्रचार से महान नहीं बने अपितु अपने श्रेष्ठ कामों व देश के लिये बलिदान की भावना रखने से महान बने हैं। नेताजी सुभाषचन्द्र जी का जन्म २३ जनवरी सन् १८९७ को कटक में हुआ था। इनके पिता श्री जानकीनाथ बोस एवं माता श्रीमती प्रभावती दत्त थी। नेता जी का विवाह आस्टिया मूल की नारी इमिल सेहनकी जी से १९३४ में हुआ था। इन्होंने नवम्बर, १९४२ में जर्मनी में एक पुत्री को जन्म दिया था जिसका नाम अनीता बोस है और जो वर्तमान में लगभग ७७ की आयु में जर्मनी में ही निवास करती हैं।

दिनांक १६ अगस्त सन् १९४५ में ताइवान में एक वायुयान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई, ऐसा कहा जाता है परन्तु बहुत से देशभक्तों का अनुमान है कि नेताजी इस वायुयान दुर्घटना में मरे नहीं थे। वह इसके बाद भी जीवित रहे और देश के किसी आश्रम में रहते हुए उच्चस्तरीय आध्यामिक महापुरुष का जीवन व्यतीत करते थे। जिस प्रकार से अरविन्द घोष क्रान्तिकारी होकर आध्यात्म के मार्ग पर चले थे उसी प्रकार से नेताजी भी ताइवान की घटना के बाद भारत में पहुंच कर किसी आश्रम में आध्यात्मिक योग ध्यान एवं समाधि की साधना करते हुए समाज से अपनी वास्तविकता को छिपाते हुए विलीन हो गये। सन् १९४५ में उनकी आयु मात्र ४८ वर्ष ५ माह की ही थी। देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक स्थान पर एक महात्मा जी कई कई दिन की समाधि लगाते थे। जब उनकी मृत्यु हुई तो वहां नेताजी के एक मित्र श्री उत्तम चन्द मलहोत्रा भी विद्यमान थे। वह लोगों को बता रहे थे कि यह मृतक ईश्वर का उपासक कोई और नहीं अपितु नेताजी सुभाषचन्द्र बोस थे। हम भी उस दिन उस अवसर पर वहां उपस्थित थे। बाद में उस मृतक शव को हरिद्वार या ऋषिकेश में ले जाकर राजकीय सम्मान के साथ पंचतत्वों में विलीन कर दिया गया था।

आज २३ जनवरी को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का १२३ वां जन्म दिवस है। नेताजी जब तक भारत में रहे वह कांग्रेस के सबसे अधिक, शायद गांधी और नेहरु जी से भी अधिक, लोकप्रिय नेता थे। देश की आजादी के बाद की सरकारों ने उनके देश की आजादी में योगदान के अनुरूप उन्हें सम्मान नहीं दिया। ऐसा अनुभव सभी देश प्रेमी करते हैं। कांग्रेस दल के कुछ बड़े नेताओं के विरोध के कारण, जबकि वह कांग्रेस के अध्यक्ष थे, उन्होंने वीर सावरकर जी की प्रेरणा से विदेश में जाकर देश की आजादी के लिये कार्य करने का निर्णय किया था। जब वह देश से निकले उस समय वह अंग्रेजी द्वारा हाउस अरेस्ट किये हुए थे। वहां से चलकर वह जर्मनी पहुंच गये थे। जर्मनी पहुंच कर वह वहां अंग्रेजों के शत्रु एवं विश्व प्रसिद्ध शासक एडोल्फ हिटलर से मिले थे और उनसे भारत की आजादी में सहयोग करने का प्रस्ताव किया था। उनका नैतिक व आर्थिक समर्थन उनको प्राप्त हुआ था। उन्होंने भारत की आजादी के लिये आजाद हिन्द फौज (आई–एन–ए) का गठन किया था। इसमें जापान का सहयोग भी प्राप्त हुआ था। इस आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों पर पूर्वी भारत की ओर से आक्रमण कर उनकी सत्ता को चुनौती दी थी। नेताजी के कार्यों में देश के राजनीतिक दल कांग्रेस पार्टी से जो सहयोग व समर्थन मिलना चाहिये था, वह उनको नहीं मिला। आजाद हिन्द फौज ने देश को आजाद कराने के लिये नेताजी के नेतृत्व में जो आन्दोलन, संघर्ष, युद्ध व लड़ाई लड़ी, उसने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारत का सबसे अधिक लोकप्रिय नेता बना दिया था। आज भी उनकी प्रसिद्धि उनके समकालीन अनेक बड़े नेताओं से कहीं अधिक हैं। नेताजी देश की प्रबुद्ध जनता के हृदय में विराजमान हैं और उनका सम्मान व पूजा करते हैं। हम यह भी अनुमान करते हैं कि यदि देश की आजादी के समय नेताजी राजनीति में सक्रिय होते और किसी प्रकार से नेताजी और सरदार पटेल सहित वीर सावरकर आदि में से किसी एक या तीनों को सामूहिक रूप से देश की सत्ता प्राप्त हुई होती तो भारत आज विश्व का सबसे उन्नत एवं सबसे बलशाली देश बनता। यह हमारे निजी विचार हैं। ऐसा होना सम्भव था क्योंकि इन नेताओं को देश को किस ओर ले जाना है, यह स्पष्ट था और यह लोग कभी भी वोट बैंक की राजनीति न करते जिससे देश में समरसता एवं एक देश, एक विधान एवं सबकों समान रूप से बिना भेदभाव के न्याय प्राप्त होता। ऐसा होने पर ऋषि दयानन्द सरस्वती को उनके देशहित के कार्यों व सर्वहितकारी वैदिक विचारधारा को भी उचित सम्मान प्राप्त हो सकता था। इतिहास में किन्तु परन्तु के लिये कोई स्थान नहीं होता। जो हुआ वह हमारे सामने हैं। आज देश का सौभाग्य है कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का अनुयायी एवं उनको उचित सम्मान देने वाला प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी देश चला रहा है।

नेताजी ने अंग्रेजों पर पूर्वी भारत की ओर से जो आक्रमण किया था, उसमें उन्हें सफलता प्राप्त नहीं हुई। इस पर भी वह रूस आदि के सहयोग से अपने काम को जारी रखे हुए थे। ताइवान की घटना के बाद वह लापता हो गये। सरकारी दृष्टि से उनको मृतक मान लिया गया था। देश के उनके भक्त उन्हें जीवित भी मानते रहे हैं। जो भी हो अब वह संसार में नहीं है। अब यदि वह होते तो १२२ वर्ष के होते। हमारा अनुमान है कि नेताजी आजादी के बाद देहरादून के राजपुर क्षेत्र में किशनपुर में एक साधारण से निवास स्थान पर रहे थे। लगभग ५० वर्ष पूर्व वहां उनका निधन हुआ था। मृत्यु होने के बाद हम भी उस स्थान पर पहुंचे थे। उन दिनों अध्ययन के साथ हम समाचार पत्र के हाकर का काम भी करते थे। उस क्षेत्र के घरों व कोठियों में हम कई महीनों से समाचारपत्र दिया करते थे। वहां वृद्ध उत्तम चन्द मलहोत्रा आदि लोग, जो नेताजी से जुड़े रहे थे, उस स्थान पर एकत्र हुई जनता को बता रहे थे कि वह मृतक संन्यासी जो कई कई दिन की समाधि लगाता था, वह नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी ही थे। इस स्थान पर रहते हुए वह किसी से मिलते नहीं थे। भोजन कराने वाला व्यक्ति भोजन बना कर रख जाता था और कुछ घंटों बाद बर्तन उठा कर ले जाता था। जहां उनका निवास था उसके साथ ही जंगल व झाडियां थी। जो कभी किसी सम्भावित पुलिस कार्यवाही होने पर भागने व छुपने में सहायक थी। इस प्रकार की बातें हमें स्मरण हो रही हैं जो मलहोत्रा जी वहां कह रहे थे। बाद में हमने सुना था कि प्रशासन ने उन्हें ऋषिकेश या हरिद्वार ले जाकर पुलिस की बन्दूकों से सलामी देते हुए अन्त्येष्टि संस्कार कराया था। यह सब बातें हमारे निजी अनुभव की हैं। सत्य क्या था यह कहना सम्भव नहीं है परन्तु अनुमान तो यही था कि वह व्यक्ति नेताजी हो सकते थे। नेता जी सन् १९२० से १९३० के बीच भारत राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा शाखा के नेता थे। वह सन् १९३८ में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे तथा सन् १९३९ तक कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। गांधी जी से मतभेदों के कारण उन्होंने सन् १९३९ में कांग्रेस छोड़ दी थी। इसके बाद अंग्रेजों ने उनको घर पर नजरबन्द किया था जहां से वह सन १९४० के अंग्रेजी अधिकार वाले भारत को छोड़कर विदेश चले गये थे और कुछ समय बाद जर्मनी पहुंच गये थे। नेताजी अप्रैल सन् १९४१ में जर्मनी पहुंचे थे। वहां के नेताओं की ओर से भारत की आजादी के लिये उनको अप्रत्याशित सहानुभूति, समर्थन व सहयोग प्राप्त हुआ था। नवम्बर, १९४१ में जर्मनी से प्राप्त आर्थिक सहायता से उन्होंने बर्लिन में आजाद भारत केन्द्र की स्थापना की थी। इसके साथ ही वहां आजाद भारत रेडियो भी स्थापित किया गया था जहां रात्रि समय में नेताजी का सम्बोधन प्रसारित हुआ करता था। जर्मनी में रहते हुए नेताजी को भारत की आजादी के लिये कार्य करने के लिये अनेक प्रकार से सहयोग मिला।

आजाद हिन्द फौज के गठन में नेताजी को जापान का सहयोग प्राप्त हुआ था। नेताजी ने जापान के सहयोग से जापान के उपनिवेश अण्डमान एवं निकोबार में भारत की आजाद सरकार भी बनाई व चलाई थी। यह कोई कम बड़ी उपलब्धी नहीं थी। नेताजी देश के बहुप्रतिभासम्पन्न एवं करिश्माई व्यक्तित्व वाले नेता थे। नेताजी ने ही देश को "जय–हिन्द" तथा "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा" का नारा वा स्लोगन दिया था जो आजादी के आन्दोलन में बहुत लोकप्रिय हुआ। आज नेताजी के १२३ वें जन्मदिवस पर हम उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। नेताजी अमर हैं और सदा अमर रहेंगे। ओ३म् शम्।

श्रीमद्दयानन्दाब्द–195 ओ३म् फोन नं0–0522–2286328

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

का

136वाँ, वार्षिक बृहद् अधिवेशन

दिनांक–१४, १५ मार्च, २०२० तदनुसार दिन शनिवार एवं रविवार

(तिथि–चैत्र कृष्ण षष्ठी एवं सप्तमी) सम्वत्–२०७६)

अधिवेशन स्थल- सभा भवन प्रांगण-5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

समस्त पदाधिकारी / अन्तरंग सदस्य / प्रतिनिधि / आर्य बन्धुओं / बहिनों,

निवेदन के साथ सूचित करना है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का दो–दिवसीय अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन एवं वार्षिक अधिवेशन (साधारण सभा) आगामी दिनांक १४, १५ मार्च, २०२० तदनुसार दिन शनिवार एवं रविवार को सभा प्रांगण में प्रातः ०८.०० बजे से सायं ०६.०० बजे तक संस्था प्रधान–डॉ० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा, जिसमें पूरे प्रदेश की आर्य समाजों / जिला सभाओं / शैक्षणिक संस्थानों एवं गुरूकुलों आदि के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सभा द्वारा आर्य समाजों और जिला सभाओं को प्रतिनिधि चित्र डाक से भेजे जा चुके हैं। आप अपनी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं का विवरण चित्र में भरकर समस्त स्रोतों से आय का दशांश, सूदकोटि, वेद प्रचार फण्ड, प्रतिनिधि शुल्क एवं आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क आदि जमा कर रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। विशेष परिस्थिति में प्रधान जी की अनुमति से ये चित्र एवं वांछित दशांश आदि के साथ प्रतिनिधि चित्र अधिवेशन से पूर्व अथवा अधिवेशन के समय जमा किये जा सकेंगे। जमा करने वाले धनराशि का आकलन निम्न प्रकार से होगाः–

(क) आर्य समाज के सभासद / सदस्यों का रू० ५ / – प्रतिमाह प्रति सदस्य के हिंसाब से एक वर्ष के कुल चन्दे का दशांश।
(ख) आर्य समाज की परिसम्पत्तियों से यथाः– दुकानों / भवनों / अतिथि गृहों / विद्यालयों का किराया, दान से प्राप्त धनराशि, से प्राप्त आय आदि का पूरे वर्ष में प्राप्त कुल धन का दशांश।
(ग) सूदकोटि के रूप में रू० २५ / –
(घ) वेद प्रचार फण्ड के रूप में प्रति सदस्य / सभासद रू० २ / – वार्षिक
(च) प्रतिनिधि शुल्क के रूप में प्रत्येक प्रतिनिधि रू० २५ / – इसमें किसी भी समाज के पहले ११ सदस्य पर १, ३१ सदस्य पर २ एवं प्रत्येक अगले २० सदस्य पूर्ण होने पर अतिरिक्त प्रतिनिधि बन सकेंगे।
(छ) आर्य मित्र का वार्षिक शुल्क रू० १०० / – अथवा आजीवन शुल्क के रूप में १००० / – के हिंसाब से।
(ज) जिला आर्य प्रतिनिधि सभाएं रू० १०० / – दशांश एक मुश्त तथा रू० १०० / – आर्य मित्र शुल्क एवं प्रतिनिधि शुल्क प्रति प्रतिनिधि रू० २५ / – भी सभा में जमा करके रसीद प्राप्त कर लें।
(झ) *प्रत्येक जिला सभा न्यूनतम ११ समाजों का प्रतिनिधित्व करने पर ही संगठित मानी जायेंगी।*

इस प्रकार उपर्युक्त समस्त मदों को जोड़कर जो भी धन बनता हो, उसे चित्र के साथ भरकर सभा में दिनांक–१५ फरवरी, २०२० *तक अवश्य जमा* करा दें। यह धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा नकद धनराशि के रूप में सभा में चित्र के साथ जमा की जा सकती हैं। मनीआर्डर, आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के नाम भेजें। बैंक ड्राफ्ट, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ के नाम से भेजें। जमा धन की रसीद सभा से अवश्य ही प्राप्त कर लें। जिन समाजों को वार्षिक चित्र प्राप्त न हो, वे समाजें सभा के उपरोक्त फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सभा प्रांगण में तथा कुछ अन्य स्थानों पर सभी आगन्तुक / प्रतिनिधियों के ठहरने एवं भोजन व्यवस्था सभा भवन प्रांगण में ही की गई है। कृपया रास्ते के लिए ऋतु अनुकूल वस्त्रों को साथ रखें।

इस द्विदिवसीय अधिवेशन का संक्षिप्त कार्यक्रम निम्न प्रकार हैः–

दिनांक 14-03-2020 दिन शनिवार

प्रथम सत्र

प्रातःकाल ८.०० बजे	–	राष्ट्रभृत यज्ञ (सभा की भव्य यज्ञशाला में) भजन एवं प्रवचन।
प्रातःकाल १०.०० बजे	–	ध्वजारोहण– माननीय सभा प्रधान जी द्वारा।
प्रातःकाल ११.०० बजे	–	प्रदेशीय अन्तरंग सभा की बैठक।
१ बजे से भोजनावकाश		

द्वितीय सत्र

अपराह्न ०२.०० बजे से	–	आर्य महासम्मेलन प्रारम्भ।
सायंकाल ६.०० बजे	–	सामूहिक संध्या।
रात्रिकाल ७.०० से ६.००	–	सामाजिक कुरीतियाँ, भ्रष्टाचार निवारण सम्मेल(मद्यनिषेध / नशाबंदी / दहेज उन्मूलन आदि विषयों पर)
रात्रि ६.०० बजे	–	शान्ति पाठ के उपरान्त प्रथम दिन का सम्मेलन समाप्त।

द्वितीय दिवस दिनांक 15-03-2020 (रविवार)

तृतीय सत्र

प्रातःकाल ८.०० से ६.०० बजे तक	–	राष्ट्रभृत यज्ञ, भजन एवं उपदेश आदि।
पूर्वाह्न ११.०० बजे से	–	साधारण सभा की बैठक प्रारम्भ।
"	–	माननीय सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री का प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
"	–	वार्षिक वृत्तांत एवं आय–व्यय का लेखा प्रस्तुत।
"	–	अनुमानित आय–व्यय का लेखा स्वीकारार्थ प्रस्तुत तथा अन्य आवश्यक विषय।
दोपहर १.०० बजे	–	भोजन अवकाश

चतुर्थ सत्र

प्रातःकाल ०१.०० बजे से	–	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन
अपराह्न २.०० बजे से	–	आर्य समाज संगठन, महिला उत्थान एवं युवा चरित्र निर्माण सम्मेलन।
सायं ४.०० बजे	–	धन्यवाद, शान्ति पाठ तथा अधिवेशन के समापन की घोषणा।

(डॉ0 धीरज सिंह आर्य)	**(अरविन्द कुमार)**	**(ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य)**
प्रधान	**कोषाध्यक्ष**	**मन्त्री**

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ

दुष्ट के साथ मित्रता न करें?

ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, सभामंत्री

१. दुर्जनेन सभं संख्यम् प्रीति चापिन कारयेत्।
उष्णो दहति च अंगारशीत कृष्णायेत करं।

(हितोपदेश मित्रलाभ ८०)

दुष्ट के साथ मित्रता न करे यदि गर्म अंगारा तो जला देगा और ठण्डा होता तो राख बन जायगा और हाथों को काला कर देगा।

२. परोक्षे कार्य हन्तांर प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत् तादृश मित्रं विषकुभं पयोसुखं।।

(हितोपदेश मित्रलाभ ७७)

सामने मीठी–मीठी बाते करने वाला और पीठ पीछे कार्य बिगाड़ने बुराई करने वाले से मित्रता नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह मित्र उस विष के भरे घड़े के समान है जिसके मुख में दूध हो और अन्दर विष भरा हो।

३. सर्वथा सुकरं मित्रं, दुष्करं प्रतिपालने।
अनित्यत्वात्तु चिन्तानामप्रीतिरल्पेऽपि भिद्यते।।

(वाल्मीकि रामायण कि० ३२/७)

मित्र बनाना बड़ा सरल है किन्तु उसको निभाना बड़ा कठिन है क्योंकि चित्त के अस्थिर होने से, छोटे कारण से भी प्रेम टूट जाता है।

- साभार

कर्म करो

- डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं स्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्तये नरे।। यजुर्वेद ४०/२

हम मानव! इस संसार में शतवर्ष (अपनी आयुभर) वेद–विहित श्रेष्ठ कर्मों को ही करते हुये जीवित बने रहने की आकांक्षा करें। इस प्रकार कर्त्तव्य भावना से कर्म करते हुए तेरे ऊपर कर्म की वासना का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इस संसार में कर्म का दूसरा कोई विकल्प नहीं हैं। कर्म जीवन का अनिवार्य तत्व है।

मनुष्य कर्म, अकर्म , विकर्म इन तीन संवेदना विभिन्न स्थितियों से कर बैठा है कुछ भी इधर–उधर होन पर कोई न कोई स्विच और उसका परिणाम सन्मुख अवश्य आयेगा। मनुष्य स्वभावतः ही कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों के साथ सरीरधारी बना है। चेतन आत्मा के ज्ञान और क्रिया से विरत रहना सम्भव नहीं। 'आत्मा शब्द की रचना भी अत सातत्य गमने' धातु से हुई है, जिसका अर्थ ही है ''सतत गतिशील तत्व''।

इसीलिये मानव के लिए अनिवार्य है कि यदि वह अच्छा नहीं करेगा तो वह बुरा अवश्य करेगा या महत्वहीन निरर्थक क्रियायें करेगा। निरर्थक क्रियायें सामर्थ्य का अपव्यय करती हैं अतः सदोष हैं। दुष्ट क्रियायें दुर्वृत्ति और आसक्ति का ही अन्यतम रूप है। अतः वासना उत्पत्ति और बन्धन का कारण बनती हैं। केवल सत्क्रियायें व शास्त्र निर्दिष्ट क्रियायें ही अनासक्त भाव अर्थात् कर्तव्य बुद्धिमात्र से संभव हैं और उनसे समाज की आवश्यकता की पूर्ति भी होती है, तथा व्यक्ति के चरित्र की उन्नति भी होती है तथा केवल कर्तव्य बुद्धि से किये जाने के कारण पुनः वह कर्म वासना रहित होने से अगले भोग के लिए *अन्तःकरण पटल पर कोई संस्कार भी नहीं छोड़ते हैं*। इसलिए अनासक्त एवं कर्तव्यबुद्धि के शास्त्र निर्दिष्ट सत्कर्मों की योजना ही जीवन के लिये परम अनिवार्य विकल्परहित समाधान है।

आर्य समाज चन्देना कौली में यज्ञ प्रवचन सम्पन्न हुआ

आर्य समाज चन्देना कौली के कुशल नेतृत्व एवं निर्देशन के जिला सहारनपुर की समस्त आर्यसमाजों की ओर से १३१ परिवारों में मकर संक्रांति १४ जनवरी को चन्देना कौली में एक साथ यज्ञ भजन प्रवचन का कार्यक्रम किया गया।

इस महान यज्ञ की समस्त सुचारू व्यवस्था आर्य समाज चन्देना कौली द्वारा करवायी गयी। प्रत्येक याज्ञिक परिवार में समाज की ओर से हवन सामग्री, समिधा, घी की व्यवस्था एक दिन पूर्व की गयी। और जनपद सहारनपुर एवं आसपास की जनपदों से आर्य बन्धुओं को परिवारों में जाकर निःशुल्क बिना दक्षिणा के यज्ञ करवाया। यज्ञ की व्यवस्था स्थानीय समाज के काम कर्ताओं द्वारा करवायी गयी। और प्रत्येक पुरोहित ने परिवारों में वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी दी और सभी ग्रामवासी इस आयोजन से बेहद खुश रहे। और सभी ने यथा सम्भव कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया।

शोक श्रद्धांजलि

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करती है और खेद प्रकट करती है तथा इन सबकी सद्गति और शान्ति की कामना करती है–

१. पूर्व मेयर श्रीमती सरोज सिंह पत्नी ओ३म् प्रकाश सिंह पूर्व मन्त्री उ०प्र० सरकार का २६ जनवरी को लखनऊ में निधन हो गया वे एक कर्मठ, सुयोग्य महिला थी उनके निधन से आर्य समाज की अपूर्णणीय क्षति हुई है आर्य समाज बगहा में शोक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

–बेचन सिंह, अन्तरंग सदस्य उ.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा

२. श्रीमती सीतारानी पत्नी स्व० विश्वनाथ गुप्त का २७ जनवरी को निधन हो गया है। आर्य समाज की अपूर्णणीय क्षति हुई है राजनाथ गोयल अमरोहा ने गहरा दुःख प्रकट किया और उनकी सद्गति और शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

–राजनाथ गोयल अंतरंग सदस्य, आ.प्र.सभा उ०प्र०, लखनऊ

३. आर्य जगत की विदुशी डॉ० निष्ठा विद्यालंकार की माता जी का ७ दिसम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अत्यन्त प्रभावशाली महिला थी उनके निधन से आर्य समाज की महान क्षति हुइ है।

दुःखी परिवार निष्ठा वेदालंकार एवं आचार्य जयराम सिंह त्यागी एवं समस्त दुःखी परिवार।

आर्य समाज क्या? क्यों? कैसे?

रचयिता – रोहित आर्य

आर्य समाजी नाम को सुनकर, पाखण्डी थर्राते हैं,
नज़र नहीं फिर आते हैं, ईश्वर के गुण गाते हैं।
ढोंग और आडम्बर छिपकर, अपनी जान बचाते हैं,
नज़र नहीं फिर आते हैं, ईश्वर के गुण गाते हैं।।०।।
आर्य समाज है नाम जगत को, सच्चा पथ दिखलाने का,
वेदों की प्राचीन पद्धति, को सबको सिखलाने का।
ईश्वर की पावन वाणी, हर मानव तक पहुँचाते हैं।।१।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
भूत–प्रेत, ग्रह–उपग्रहों की, चाल नहीं फिर चलती है,
गुरु–घण्टालों, पीर और मुल्लों की दाल न गलती है।
सुनकर इसका नाम सिर्फ, सब भूत–प्रेत उड़ जाते हैं।।२।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
बिल्ली अगर रास्ता काटे, फ़र्क नहीं फिर पड़ता है,
दयानन्द के चेलों को न, फिर पाखण्ड जकड़ता है।
शनि और राहू–केतू भी, उल्टे लटके जाते हैं।।३।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
अपने जीवन को जीने का, सबको है अधिकार यहाँ,
हर एक प्राणी ईश पुत्र है, करो सभी को प्यार यहाँ।।
जीव मात्र की रक्षा के हित, दयाभाव अपनाते हैं।।४।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
माता–पिता गुरु आचार्यों की, सेवा यही सिखाती है,
धरती पर ही स्वर्ग मिलेगा, सबको राह दिखाता है।
सच्चे ईश्वर को पाने का, सच्चा पथ दिखलाते हैं।।५।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान के, भाव जाग्रत करता है,
देशद्रोह की कुटिल भावना, को पल में मृत करता है।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश स्वयं ही, राष्ट्रभक्त बन जाते हैं।।६।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...
हर मनुष्य पावन वेदों को, पढ़ सकता, सुन सकता है,
स्त्री, शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, हर कोई गुन सकता है।
पहनाकर उपवीत सभी को, पावन आर्य बनाते हैं।।७।।
नज़र नहीं फिर आते हैं..
ऋषिवर दयानन्द से, हम सबने यह शक्ति पाई है,
देश–धर्म के विरोधियों को, नानी याद दिलाई है।
यज्ञों को करके धरती को, ''रोहित'' स्वर्ग बनाते हैं।।८।।
नज़र नहीं फिर आते हैं...

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

बुलन्दशहर गुलावटी में राष्ट्रीय दिवस पर हुआ बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ एवं बालिका सुरक्षा जागरुकता से लिए गए छायाचित्र

अथर्व वेद पारायण यज्ञ

दिनांक २८, २९, ३० जनवरी २०२० को वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज मुजफ्फर नगर एवं तारा चन्द्र वैदिक पुत्री डिग्री कालेज मुजफ्फर नगर में सम्पन्न हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या डॉ० पुनीति आर्या (मेरठ) वेदपाठ– गुरूकुल शासनी हाथरस की छात्रांए, एवं भजनोपदेशक– संदीप आर्य (मेरठ) ने प्रस्तुत किया।

वैदिक पुत्री पाठशाला इण्टर कालेज, ताराचन्द्र डिग्री कालेज मुजफ्फर नगर के प्रबन्ध एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार ने यज्ञ को पूर्ण निष्ठा एवं दयानन्द के विचानों पर सम्पन्न कराया यज्ञ में हजारों लोगों ने आहुति देकर संकल्प लेकर शिक्षाओं को स्वीकार किया। प्रबन्धक ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी आर्यजनों को धन्यवाद दिया।

स्वामी– आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्पादक– सत्यवीर शास्त्री, मुद्रक–प्रकाशक श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, उत्तर प्रदेश भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप से शारदा प्रिंटिग प्रेस, माडल हाउस लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक/मुद्रक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।